International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

हड़प्पा सभ्यता में श्रेणी संगठन का स्वरूप

Dr. Jagpal Mann

Assistant Professor, Department of History, Culture & Archaeology, C.R.S.U., Jind.

सिन्धु सभ्यता के नगरों की समृद्धि का मुख्य आधार व्यापार तथा वाणिज्य था, जो भारतीय आन्तरिक क्षेत्रों तथा दूरवर्ती क्षेत्रों तक फैला था। निश्चित ही दूरवर्ती क्षेंत्रों से बड़े पैमाने पर व्यापार के लिए सामुहिक व्यापारिक प्रणाली गठित की गई होगी। लोथल तथा धौलावीरा से अनेक ऐसे परिवारों के निवास स्थलों के अवशेष प्राप्त होते है, जो तांबें की वस्तुएँ तथा गनके बनाते थे। सम्भवतः विभिन्न उद्योगों में विद्यमान सांगठनिक भावना ने ही सामाजिक विकास की प्रकिया को तेज किया। सिन्धु सभ्यता में विद्यमान इस तरह के औद्योगिक संगठनों को हम श्रेणियों का पूर्ववर्ती रूप कह सकते है।

आर्थिक गतिविधियों के अतिरिक्त हड़प्पा कालीन सामाजिक सरंचना के विभिन्न पहलूओं की जानकारी हमें उतखन्न से प्राप्त वास्तुवषशों तथा अन्य पुरावस्तुओं से प्राप्त होती है। सिन्धु सभ्यता के अनेक नगरीय तथा ग्रामीण पुरास्थलों के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर संगठनों के विषय में अनुमान लगाया जा सकता है। हड़प्पा काल में मकानों कों योजनात्मक तरीके से बनाया जाना तथा सड़ाकों और गलियों की सुव्यवस्था विभिन्न सामाजिक अथवा नागरिक संगठनों के अस्तित्व को प्रमाणित करते हैं।

इसी प्रकार हड़प्पा काल के लोगों के धार्मिक संगठनों के बारे में अनुमान किया जा सकता है। विभिन्न पुरास्थलों से प्राप्त मुद्राओं पर अंकित विभिन्न पशु चिन्ह तथा अन्य चिन्ह सम्भवतः विभिन्न धारणाओं के अनुरूप रहे होंगे और सम्भवतः ये चिन्ह विभिन्न धार्मिक संघों के गण–चिन्ह के रूप में स्वीकार किये गये थे।

यद्यपि सिन्धु सभ्यता में राजनैतिक संगठनों का स्वरूप विद्वानों के लिए विवाद का विशय बना हुआ है। यद्यपि हड़प्पा कालीन दुर्गीकृत नगरों में गढी की खोज एक निश्चित षासन तन्त्रअथवा राजनैतिक संगठन की कल्पना का समर्थन करती है। मोहनजोदड़ों, हड़प्पा, लोथल, धौलावीरे, राखीगढी आदि से मिले सार्वजनिक भग्नावेशश इन्हीं निकायों अथवा राजनैतिक संगठनो के अस्तित्व का संकेत मिलता है। यद्यपि सभ्यता में सुदृढ़ प्रशासनतंत्र में श्रेणी संगठनों के अस्तित्व के बारे में लिखित साक्ष्यों के आभाव में निश्चितरूप से कुछ भी कहना कठिन हे तथापि पुरातात्विक स्त्रोतों के आधार पर श्रेणी संगठनों के अस्तित्व की सम्भावना से इंकार नही किया जा सकता है।

प्राचीन भारत में सर्वप्रथम नगरीकरण की इस प्रक्रिया के साथ विभिन्न आर्थिक प्रक्रियों उद्योग, व्यापार तथा वाणिज्य के विकास की प्रक्रिया भी प्रारम्भ होती है। हड़प्पा सभ्यता से सम्बन्धित अनेक नगर एवं व्यापारिक पुरास्थलों से प्राप्त मुहरों पर प्राप्त लिपि विभिन्न आकृतियों का अंकन तथा कुछ मृदभाण्डों पर प्राप्त 'ग्राफिटी मार्क' के आधार पर कहा जा सकता है कि हड़प्पा कालीन लोग अलग–अलग समुहों में बट कर आर्थिक क्षेत्र की गतिविधियॉं चलाते थे।

मृदभाण्डों के टुकडों पर प्राप्त ग्राफिटो मार्क से संकेत मिलता है कि सामूहिक गतिविधियाँ कुम्हारों के मध्य भी विद्यमान थी। इसलिए संघ या श्रेणी संगठनों का प्रादुर्भाव सम्भवतः नगरीकरण की प्रकिया से ही माना जा सकता है।

1. आर्थिक क्षेत्र में श्रेणी संगठनः

सिन्धु सभ्यता के प्राचीन नगरों से प्राप्त पुरावशेषों से यह अनुमान लगाया जाता है कि सामान्यतः लोगों का जीवन समृद्ध था।[1] सिन्धु सभ्यता के नगरों की समृद्धि का मुख्य आधार व्यापार तथा वाणिज्य था जो सम्भवतः एक निश्चित सामुहिक व्यापारिक कार्य प्रणाली द्वारा संचालित था।[2]

सिन्धु सभ्यता की विकसित तकनीक से बने विभिन्न उपकरणों से स्पश्ट है कि ये पेशेवर शिल्पियों की कृतियॉ है, जिनके सम्भवतः अपने अपने सगंठन रहे होगें।[3] विभिन्न पुरास्थलों से ऐसे परिवारों के निवास स्थल के अवशेश प्राप्त होते है, जो इंगित करते है कि ताँबे को वस्तुए, मनके, हाथी दांत तथा मापतौल की वस्तुए बनाने वाले, कपडा बुनने व रंगने वाले, ईट बनाने वाले, कुम्हारों तथा अन्य शिल्पियों के सगठंन आवश्यक रहे होंगे।[4] लोथल की खुदाई से इस बात के प्रमाण मिले है कि शैल का काम करने वाले कारीगर एक स्थान पर इकट्ठे होकर शैल से बनी वस्तुओं का निर्माण करते थे। इसी तरह के आवासीय योजना के प्रमाण अन्य उद्योगों के सन्दर्भ में भी विभिन्न पुरास्थलों से प्राप्त होते है।[5] आवासीय योजना में किसी उद्योग विशष के लिए स्थान निश्चित करने के उल्लेख हमें बाद के कालों में भी प्राप्त होते है। सिन्धु सभ्यता में विकसित इस तरह के औद्योगिक संगठन श्रेणियों की तरह काम करते थे।[6]

सिन्धु सभ्यता में क्रय–विक्रय वस्तु विनियम के माध्यम से होता था। व्यापारिक वस्तुओं की गांठों पर व्यापारिक समुहों द्वारा अपनी मुहर की छाप लगाने की प्रथा थी, जिसके प्रमाण हमें लोथल की खुदाई से प्राप्त होते है। इससे यह अनुमान लगाया जाता है कि व्यापारिक संगठनों के अपने अपने चिन्ह होते थे।

कृषि तथा पशुपालन सिन्धु सभ्यता के आर्थिक जीवन का प्रमुख आधार था। सिन्धु घाटी की उर्वरा भूमि कृषि के लिए अत्यन्त उपयुक्त थी। सम्भवतः कृषि क्षेत्र में भी कोई संगठन रहा होगा क्योकि सिन्धु सभ्यता में मिले अन्नागरों का संचालन किसी न किसी संगठन के अधीन तो रहा ही होगा।[7] इसी वरह से धोलावीरा के उत्खन्न में मिले पानी संग्रह के लिए टैंकों का निर्माण भी किसी संगठित कृषि सम्बन्धी संस्था के तत्वाधान में ही करवाया गया होगा जो सिचाई व्यवस्था के द्योतक हैं।[8]

2. सामाजिक क्षेत्र में श्रेणी संगठनः

हड़प्पा कालीन सामाजिक सरंचना के अस्तित्व की जानकारी हमें उत्खन्न से प्राप्त वास्तुवशेषों तथा पुरावस्तुओं के आधार पर प्राप्त होती है। सिन्धु सभ्यता के अनेक नगरीय तथा ग्रामीण पुरास्थलों के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर संगठनों के विषय में अनुमान लगाया जा सकता है। प्राचीन हड़प्पा कालीन नगर रक्षा प्राचीर से घिरे हुए विशेष सुविधाओं से युक्त निवास स्थल निःसंदेह विशेष व्यक्तियों शासक वर्ग अथवा पुरोहित वर्ग के निवास रहे होंगे। नगर क्षेत्र में अन्य शासकीय अधिकारी, व्यापारी, सैनिक एवं शिल्पी संघ के लोग रहते थे।[9] बनावली,

धोलावीरा, कालीबंगा वएं लोथल आदि पुरास्थलों से जो साक्ष्य मिले है इससे यह ज्ञात होता है कि नगर क्षेत्र भी दुर्ग की तरह प्राचीर से सुरक्षित थे। नगर क्षेत्र के चारों ओर के बाहरी क्षेत्र में कृषक, कुम्भकार, बढई, नाविक, सुनार, मनके एवं मुहरे बनाने वाली शिल्पी, जुलाहे तथा श्रमिक वर्गो के संगठनों के लोग रहते थे।[10] हड़प्पा काल में मकानों को योजनात्मक तरीके से बनाया जाना, सड़को तथा गलियों की सुव्यवस्था आदि नागरिक संगठनों के अस्तित्व को प्रमाणित करते है।[11]

3. धार्मिक क्षेत्र में श्रेणी संगठनः

पुरातात्विक खोजों से हमें हड़प्पा सभ्यता के लोगों के धार्मिक विचारों का अनुमान लगाने के लिए पुरावशेषों से सहायता प्राप्त होती है। विभिन्न पुरास्थलों से प्राप्त मुद्राओं पर अंकित विभिन्न पशु चिन्ह तथा अन्य चिन्ह सम्भवतः विभिन्न धाराणाओं के अनुरूप रहे होगे और ये चिन्ह विभिन्न धार्मिक संघों के गण–चिन्ह के रूप में स्वीकार किये गये। हड़प्पा कालीन नगरीय योजना में सार्वजनिक यज्ञवेदियों का पाया जाना धार्मिक क्रिया–कलापों में सामूहिक गतिविधयों की ओर इंगित करता है।[12] हड़प्पा कालीन कालिबगंन, लोथल, बनावली आदि पुरास्थलों के उत्खन्न में बहुत सी अग्नि वेदियों अथवा अग्नि कुण्ड पाए गए है। जिनका सम्भवतः यज्ञ–वेदिकाओं के अनुरूप प्रयोग किया जाता था।[13]

मोहनजोदड़ों में आवासीय भवन के समीप स्तुप वाले टीले के उत्खन्न से एक विशाल भवन मिला है, जो सम्भवतः पुरोहितों के निगम या संघ का कार्यलय रहा होगा। सर जॉन मार्शल ने उत्खनित इस विशाल भवन को पुरोहितीय भवन कहा है। इस प्रकार इस काल में धार्मिक जीवन में संधठित प्रवृति दिखाई देती है।[14]

4. राजनैतिक क्षेत्र में श्रेणी संगठनः

सिन्धु सभ्यता का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक था। सिन्धु सभ्यता में राजनैतिक संगठनों का स्वरूप विद्वानों के लिए विवाद का विषय बना हुआ है। यद्यपि हड़प्पा कालीन नगरों में गढी की खोज एक निश्चित शासन तन्त्र अथवा राजनैतिक संगठन की संकल्पना का समर्थन करती है। अब तक प्रकाश में आए तथ्यों के आधार पर नगर का दुर्ग शासकों का मुख्यालय अथवा निवास स्थल रहा होगा। यह नगर प्रशासन का केन्द्र बिन्दु था। माहनजोदड़ों, हड़प्पा, लोथल, धोलावीरा, राखीगढ़ी, आदि से मिले सार्वजनिक भग्नावशेष इन्ही शासकों संबन्धी निकायों अथवा संगठनों के अधीन थे। सम्भवतः नगरों में एक नगर परिषद होती थी, जिसकी नियमित बैठकें होती होंगी। मोहनजोदड़ों से प्राप्त कथित सार्वजनिक सभा भवन के अवशेष तथा बाद के वैदिक काल में प्राप्त परिषद् के उल्लेखों से इसकी पुष्टि होती है।

सिन्धु सभ्यता में नगर नियोजन और बस्तियों के निमार्ण में क्षेत्रीय अन्तर होते हुए भी प्रायः एकरूपता देखने को मिलती है। लगभग सभी हड़प्पा संस्कृति से सम्बन्धित नगरीय पुरास्थलों पर परिचम के दुर्ग तथा पूर्व दिशा में नगर की स्थिति से हड़प्पा सभ्यता में सुदृढ़ प्रशासनतंत्र अथवा राजनैतिक संगठन के अस्तित्व का संकेत मिलता है। स्टुअर्ट पिग्गटँ का विचार है कि सिन्धु सभ्यता के प्रशासन का संचालन हड़प्पा, मोहनजोदड़ों, राखीगढी तथा लोथल

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

स्थित क्षेत्रीय राजधानियों से किसी संगठित राजनैतिक संगठन द्वारा किया जाता रहा होगा। सिन्धु सभ्यता का राजनैतिक संगठन बहुत कुछ समकालीन सुमेरियन सभ्यता की तरह था। इस तरह यह अनुमान लगाया जाता है कि हड़प्पा के शासक एक राजनैतिक संगठन में संगठित थे।[16]

त्मतिमदबमे

1. किरण कुमार थपल्याल तथा एस.पी. शुक्ल, सिन्धु सभ्यता, 1976, पृ0 168
2. कृष्ण दत वाजपेयी, प्राचीन भारत में सघंटित जीवन, पृ0 395
3. किरण कुमार थपल्याल तथा एस.पी. शुक्ल, सिन्धु सभ्यता, 1976,पृ0 168
4. वही, 1976, पृ0 41, 51, 53
5. ईश्वरी प्रसाद, प्राचीन भारतीय संस्कृतिक, कला, राजनीति, धर्म तथा दर्शन, 1979, पृ0 92
6. जय नारायण पाण्डेय, पुरातत्व विमर्श, 2002, पृ0 401
7. वही, 2002, पृ0 402
8. किरण कुमार थपल्याल तथा एस.पी. शुक्ल, सिन्धु सभ्यता, 1976, पृ0 51
9. जय नारायण पाण्डेय, पुरातत्व विमर्श, 2002, पृ0 401
10. वही, 2002, पृ0 402
11. शिवसेखर मिश्र, भारत का सास्ंकृतिक विकास, 1922, पृ0 19
12. जय नारायण पाण्डेय, पुरातत्व विमर्श, 2002, पृ0 411
13. मक्खन लाल, प्राचीन भारत, 2003, पृ0 84
14. वी.के. अग्निहोत्री, भारतीय इतिहास, 2003, पृ0 26
15. को.अ. अंतोनोवा, भारत का इतिहास, 1987, पृ0 32
16. जय नारायण पाण्डेय, पुरातत्व विमर्श, 2002, पृ0 400